अभ्यास : प्रश्न तथा उनके उत्तर

■ आइए याद करें :

(i) मुगलों के उत्तराधिकारी राज्य में कौन राज्य आत

(क) सिक्ख (ख) जाट
(ग) मराठा (घ) अवध

बंगाल में स्वायत राज्य की स्थापना किसने की ?
(क) मुर्शिद कुली खाँ (ख) शुजाउद्दीन
(ग) बुरहान-उल-मुल्क (घ) शुजाउद्दौला

सिक्खों के एक शक्तिशाली राजनैतिक और सैनिक शक्ति के रूप में किसने परिवर्तित किया :
(क) गुरुनानक (ख) गुरु तेगबहादुर
(ग) गुरु अर्जुनदेव (घ) गुरु गोविन्द सिंह

शिवाजी ने किस वर्ष स्वतंत्र राज्य की स्थापना की ?
(क) 1665 (ख) 1680
(ग) 1674 (घ) 1660

मराठा परिसंघ का प्रमुख कौन था ?
(क) पेशवा (ख) भोंसले
(ग) सिंधिया (घ) गायकवाड़

उत्तर–(i) (घ), (ii) (क), (iii) (घ), (iv) (ग), (v) ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में मेल बैठाएँ :

(i)	ठेकेदारी प्रथा	—	मराठा
(ii)	सरदेशमुखी	—	औरंगजेब का निधन
(iii)	निजाम-उल-मुल्क	—	जाट
(iv)	सूरजमल	—	हैदराबाद
(v)	1707 ई०	—	भू-राजस्व प्रशासन
(i)	ठेकेदारी प्रथा	—	भू-राजस्व प्रशासन
(ii)	सरदेशमुखी	—	मराठा
(iii)	निजाम-उल-मुल्क	—	हैदराबाद
(iv)	सूरजमल	—	जाट
(v)	1707 ई०	—	औरंगजेब का निधन

इए विचार करें :

प्रश्न (i) अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा टाने की कोशिश क्यों की ?

उत्तर–अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा को की कोशिश इसलिए की कि वे मुगल-प्रभाव को कम करना थे। यही हाल हैदराबाद का भी था। इस प्रकार धीरे-धीरे हों से पूर्णतः मुक्त होकर स्वतंत्र शासक बन बैठे।

प्रश्न (ii) शिवाजी ने अपने राज्य में कैसी प्रशासनिक था कायम की ?

उत्तर–शिवाजी के काल में प्रशासन का केन्द्र राजा अर्थात शिवाजी थे। राजा को सहयोग देने के लिए आठ मंत्री थे 'अष्ट प्रधान' कहा जाता था।

(i) पेशवा–पेशवा प्रधानमंत्री था। प्रशासन और अर्थ विभाग देखरेख करता था। राजा के बाद यही सबसे अधिक शक्ति अधिकारी था।

(ii) सर-ए-नौबत–यह सेनापति की नियुक्ति करता था तथा के साथ ही अन्य सैनिक साजो-सामान की देखरेख करता

(iii) मजुमदार-लेखाकार–इनका काम राज्य के आय-व्यय का लेखा रखना था।

(iv) वाके नवीस–गृह विभाग के साथ ही गुप्तचर विभाग का यह प्रधान होता था। राज्य के विरोधी शक्तियों का यह विवरण रखता था।

(v) सुरु नवीस–राजा को पत्र व्यवहार में मदद करना सुरु नवीस का ही काम था।

(vi) दबीर–दबीर विदेश विभाग का प्रधान होता था। पड़ोसी राज्यों से सम्बंध बनाये रखना इसी का काम था।

(vii) पंडित राव–पंडित राव धार्मिक मामलों का प्रभारी था। विद्वानों और धार्मिक कार्यों हेतु मिलने वाले अनुदानों का वितरण यही करता था।

(viii) न्यायाधीश शास्त्री–हिन्दू न्याय प्रणाली का व्याख्याता न्यायाधीश शास्त्री ही हुआ करता था।

प्रश्न (iii) पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा राज्य का विस्तार क्यों हुआ ?

उत्तर–शिवाजी की मृत्यु के बाद और औरंगजेब के जीवित रहने तक मराठा क्षेत्रों पर पुनः मुगलों का अधिकार हो गया। लेकिन जैसे ही 1707 में औरंगजेब की मृत्यु हुई, शिवाजी के राज्य पर चितपावन ब्राह्मणों के एक परिवार का प्रभाव स्थापित हो गया। शिवाजी के उत्तराधिकारियों ने उसे पेशवा का पद दे दिया। इस नये बने पेशवा ने पुणा को मराठा राज्य का केन्द्र बनाया। पेशवाओं ने मराठों के नेतृत्व में सफल सैन्य संगठन का विकास किया, जिसके बल पर उन्होंने अपने राज्य का बहुत विस्तार दिया। मुगलों के कई परवर्ती शासकों ने पेशवाओं का नेतृत्व स्वीकार कर लिया। इसी कारण पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा राज्य का विस्तार हुआ।

प्रश्न (iv) मुगल सत्ता के कमजोर होने का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर–मुगल सत्ता के कमजोर होने का भारतीय इतिहास पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। छोटे-छोटे राज्यों की भरमार हो गई। छोटे राज्यों के सभी नायक ऐश-मौज का जीवन व्यतीत करते रहे। खर्च को पूरा करने के लिए किसानों पर कर-पर-कर बढ़ाये गये। किसान तबाह होने लगे। इनकी इन कमजोरियों को अंग्रेज पैनी नजर से देख रहे थे। फल हुआ कि अंग्रेजों ने एक-एक कर सभी छोटे राज्यों को अपने अधिकार में कर लिया। इसके लिये इनको बल के साथ छल का भी व्यवहार करना पड़ा। अंततोगत्वा किसी भी रूप में ये पूरे भारत पर अधिकार करने में सफल हो गये।

प्रश्न (v) अठारहवीं शताब्दी में उदित होने वाले राज्यों के बीच क्या समानताएँ थीं ?

उत्तर–अठारहवीं शताब्दी में उदित होने वाले राज्यों तीन राज्य प्रमुख थे–बंगाल, अवध और हैदराबाद। तीनों गुलाम शासन के अधीन रहने वाले सूबे थे। इसका फल हुआ कि बहुत बातों में ये तीनों राज्य समान थे। आय का स्रोत भूत-राजस्व वसूली की व्यवस्था तीनों ने एक समान ही रखी। इन तीनों ने जागीरदारी व्यवस्था को समाप्त कर दिया ताकि राज्य शासन पर इनका आधिपत्य पूरी तरह स्थापित हो जाय। इस प्रकार तीनों राज्यों के बीच अनेक समानताएँ थीं।